नेहेरें मोहोलों में

सुख नेहेरों का अलेखे, सबों ऊपर मोहोलात।
कई मिली कई जुदियां, तरफ चारों चली जात।। १ ।।

परमधाम में नहरों के सुख बेशुमार हैं। सभी के ऊपर महल बने हैं। कई अलग-अलग बहती हैं, कई मिलकर चारों तरफ घूमती हैं।

चार तरफ चार नेहेरें, ऊपर सब ढांपेल।
कहूं चार आठ सोले मिली, कई विध मोहोलों खेल।। २ ।।

चार तरफ चार नहरें चलती हैं जो ऊपर से ढकी हैं। कहीं चार, कहीं आठ, कहीं सोलह नहरें महलों के बीच घूमती हैं।

चारों खूटों मोहोल ढांपिल, जानूं के रचिया सेहेर।
इन विध बराबर गलियां, आड़ी ऊंची गली बीच नेहेर।। ३ ।।

महल के चारों किनारे ढंके हैं लगता है जैसे शहर बसा हो। इस तरह से गलियां घूमती हैं और इन्हीं गलियों के बीच आड़ी-टेढ़ी नहरें चलती हैं।

कई कोट अलेखे पदमों, सेहेर बसे पसुअन।
कई सेहेर हैं जानवर, सबों इस्क अकल चेतन।। ४ ।।

कई करोड़ों, पदमों, बेशुमार पशुओं के शहर बसे हैं और इसी तरह से कई शहर जानवरों के हैं, परन्तु सभी के अन्दर धनी का इश्क है, चेतनता है और बुद्धि है।

यों कई नेहेरें बीच सेहेरन के, इन सेहेरों कई मोहोलात।
हर मोहोलों कई बैठकें, ए सोभा कही न जात।। ५ ।।

शहरों के बीच कई नहरें और कई महल बने हैं। हर महल में कई सुन्दर बैठने के स्थान बने हैं। जिसकी शोभा कही नहीं जा सकती।

अब नेहेरें बरनन तो करूं, जो कछू होए हिसाब।
मोहोल मोहोल बीच कई कुंड बने, कई कारंजे छूटें ऊंचे आब।। ६ ।।

नहरों का वर्णन करना तो तभी सम्भव है जब यह सीमित संख्या में हों। महल और महल के बीच कई कुण्ड बने हैं जहां फव्वारे चलते हैं।

कई जल मोहोलों चढ़े, कई मोहोलों से उपरा ऊपर।
कई लाखों हजारों बैठकें, सुख इत के कहूं क्यों कर।। ७ ।।

कई जगह पानी महलों से ऊपर चढ़ता है और कई जगह उससे भी ऊपर जाता है। यहां हजारों, लाखों बैठने के स्थान हैं। यहां के सुख का वर्णन कैसे करूं?

कई मोहोल ऊंचे अति बड़े, जैसे हक दिल चाहे।
हर मोहोलों बीच नेहेरें चलें, ए सुख बैठक कही न जाए।। ८ ।।

श्री राजजी महाराज की इच्छा के अनुसार कई महल ऊंचे और बड़े हैं। उन महलों के बीच में सुन्दर नहरें चलती हैं तथा बैठकें बनी हैं, जिसका सुख वर्णन करने में नहीं आता।

Nijanand App

हर जातों मोहोल जुदे जुदे, जुदी जुगतें पानी चलत।
जुदी जुदी जुगतें कारंजे, क्यों कर कहूं एह सिफत।। ९ ।।

हर एक ठिकाने पर अलग-अलग ढंग के महल बने हैं जिनमें अलग-अलग तरीके से पानी चलता है और अलग-अलग तरीके से फव्वारे चलते हैं। इनकी सिफत का वर्णन कैसे करूं?

इन बड़े मोहोल सुख नेहेरों के, हमें कब देओगे खसम।
मांगे मंगाए जो देओ, सब हुआ हाथ हुकम।। १० ।।

इन बड़े महलों के बेशुमार सुख हैं। श्री राजजी महाराज वह सुख हमें कब दोगे? आपके हुकम के हाथ सब कुछ है। मांगे या बिन मांगे, जैसे चाहें आप दे सकते हो?

सागर से नेहेरें आवत, पानी जुदा जुदा फैलात।
कई विध मोहोलों होए के, फेर सागरों में समात।। ११ ।।

नीर सागर से पानी की नहरें आती हैं और अलग-अलग फैल जाती हैं। कई तरह से महलों में घूम फिरकर जल वापस सागरों में चला जाता है।

कई चलत चक्राव ज्यों, कई आड़ी ऊंची चलत।
कई चलत मोहोलों पर, कई मोहोलों से उतरत।। १२ ।।

कई नहरें चक्राव (भंवर) में (घूमकर) चलती हैं, कई आड़ी चलती हैं, कई ऊंची चलती हैं, कई महलों के ऊपर चलती हैं, कई महलों से नीचे उतरती हैं।

एक नेहेर से कई नेहेरें, जुदी जुदी फिरत।
कई जुदी जुदी नेहेरें होए के, कई एक में अनेक मिलत।। १३ ।।

एक नहर से कई नहरें बन जाती हैं और अलग-अलग घूमती हैं। फिर कई अलग-अलग नहरें घूम फिरकर एक नहर में मिल जाती हैं।

कई नेहेरें मोहोलों मिने, चारों तरफों फिरत।
कई मोहोल नेहेरें कई, कई विध विध सों विचरत।। १४ ।।

कई नहरें महलों के चारों तरफ घूमती हैं। इस तरह से महलों में नहरें कई तरह से फैल जाती हैं।

कहूं चार नेहेरें मिली चली, कहूं चारसे सोले निकसत।
कई नेहेरें सुख इन मोहोलों, धनी कब करसी प्राप्त।। १५ ।।

कहीं चार नहरें मिलकर चलती हैं, कहीं चार से सोलह बन जाती हैं। हे श्री राजजी महाराज! इन नहरों और महलों के सुख हमें कब मिलेंगे?

कहूं नेहेरें जाहेर चली, कई पहाड़ों के माहें।
नेहेरें पहाड़ों या सागरों, सोभा क्यों कहूं इन जुबांए।। १६ ।।

कई नहरें जाहिर चलती हैं, कई पहाड़ों के अन्दर चलती हैं। नहरों, पहाड़ों या सागर की शोभा कैसे कहें? जबान हमारी दुनियां की है।

Nijanand App